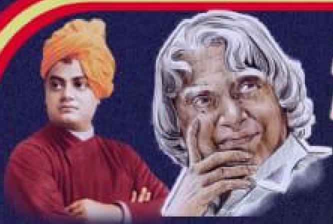

मिशन शिक्षण संवाद

बाल तरंग

बाल कविताएँ

रचनाकार- नैमिष शर्मा (स०अ०)

परि० संवि० पूर्व मा० वि०- तेहरा, विकास खण्ड व जनपद- मथुरा

संकलन- मिशन शिक्षण संवाद

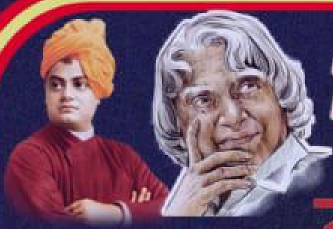

प्रभात

भोर हुई सूरज उग आया,
आँगन दिखी सुनहरी छाया।
मैंने माँ को उठते देखा,
माँ ने झुककर शीश नवाया।।

चीं-चीं करती चिड़िया आई,
मानो कहती उठ जाओ भाई।
मंजन करलो कुल्ला कर लो,
माँ ने देखो खीर बनाई।।

रचनाकार- नैमिष शर्मा (स०अ०)
परि० संवि० पू० मा० विद्यालय- तेहरा, क्षेत्र व जनपद- मथुरा

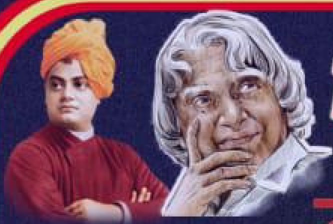

मिशन शिक्षण संवाद

बाल तरंग

बाल कविताएँ

02

मेरा बाग

बाग हमारा बड़ा सुहाना,
साथ चलो तुम घूमकर आना।
आम, पपीते, जामुन लगते,
कोयल, मोर, पपीहा बोलते।।

अमरुद के पेड़ पर चढ़कर तोड़ा,
मैंने दो अमरुद का जोड़ा।
बहुत था मीठा मन को भाया,
मेंड़ पर बैठकर मैंने खाया।।

रचनाकार- नैमिष शर्मा (स०अ०)
परि० संवि० पू० मा० विद्यालय- तेहरा, क्षेत्र व जनपद- मथुरा

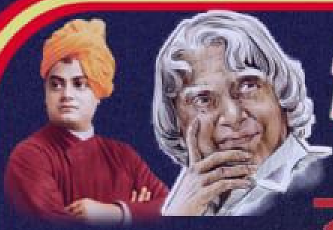

मिशन शिक्षण संवाद

बाल तरंग

बाल कविताएँ

03

```` चींटी से सीख `````

काली सबसे छोटी चींटी,
सूँघ लेती हर चीज जो मीठी।
एक-एक करके आ जाती,
आपस में मिल बाँटकर खाती।।

कभी न इनमें होती लडाई,
चीटियों में अधिक एकता पायी।
ऊपर चढ़तीं नीचे गिरतीं,
कभी न हारें कोशिश करतीं।।

रचनाकार- नैमिष शर्मा (स०अ०)
परि० संवि० पू० मा० विद्यालय- तेहरा, क्षेत्र व जनपद- मथुरा

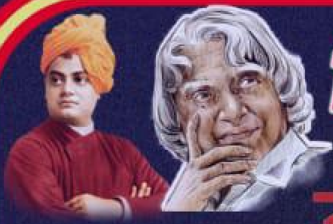

मिशन शिक्षण संवाद

बाल तरंग

बाल कविताएँ

04

```` नील गगन के तारे `````

कितना सुंदर आसमान है,
छुपा हुआ इसमें कहीं चाँद है।
सूरज की रोशनी में छुप जाते,
दिन में तारे नजर नहीं आते।।

सूरज छिपते ही तारे निकलें,
आसमान में रोशनी भी बिखेरें।
चाँद भी देखो लगा दीखने,
प्यारे सुंदर तारे कितने।।

रचनाकार- नैमिष शर्मा (स०अ०)
परि० संवि० पू० मा० विद्यालय- तेहरा, क्षेत्र व जनपद- मथुरा

मिशन शिक्षण संवाद

बाल तरंग

बाल कविताएँ

05

चार दिशाएँ

पीहु चिड़िया के बच्चे चार,
चीं-चीं कर करें माँ से पुकार।
माँ हमको उड़ बाहर जाना,
चिड़िया से उन्होंने दिशाओं को जाना।।

एक उड़ा पूर्व जहाँ उगे सूरज,
एक उड़ा पश्चिम जहाँ छिपे सूरज।
एक उड़ा उत्तर जहाँ ध्रुव तारा,
एक उड़ा दक्षिण जहाँ सागर हमारा।।

बच्चों! करलो दिशाएँ याद।
पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, चार।।

रचनाकार- नैमिष शर्मा (स०अ०)
परि० संवि० पू० मा० विद्यालय- तेहरा, क्षेत्र व जनपद- मथुरा

गिनती 01 से 10 तक

एक बच्चा दो केले लाया,
तीन बन्दरों ने खूब दौड़ाया।
चार मिनट में घर वो पहुँचा,
केला खाकर मुँह को पोंछा।।

पाँच घण्टे पढ़ स्कूल छोड़ा,
छः रास्ते में मिल गए घोड़ा।
सात मित्रों को बात सुनायी,
आठ बन्दर फिर दिए दिखायी।
नौ बच्चों ने दौड़ लगायी,
दस मिनट में घर आ गए भाई।।

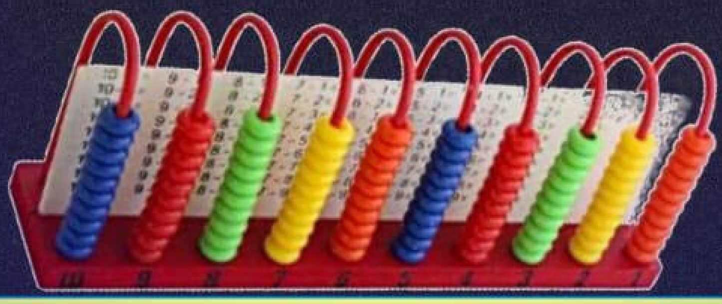

रचनाकार- नैमिष शर्मा (स०अ०)
परि० संवि० पू० मा० विद्यालय- तेहरा, क्षेत्र व जनपद- मथुरा

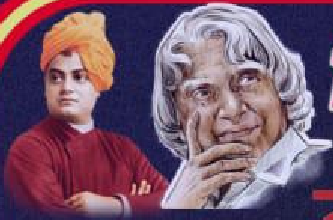

मिशन शिक्षण संवाद

बाल तरंग

बाल कविताएँ

07

स्वर अ से अः तक

अ से अनार का लाल दाना,
आ से आम हम चाहते खाना।
इ से इमली खट्टी होती,
ई से ईख गन्ना की खेती होती।।

उ से उल्लू रात में दिखता,
ऊ से ऊन से स्वेटर बुनता।
ए से एड़ी पैर की होती,
ऐ से ऐनक दादी पहनती।।

ओ से ओखली में अनाज कूटते,
औ से औरत माँ दादी को कहते।
अं से अंगूर की बेल लगाओ,
अः होती खाली समझ जाओ।।

रचनाकार- नैमिष शर्मा (स०अ०)
परि० संवि० पू० मा० विद्यालय- तेहरा, क्षेत्र व जनपद- मथुरा

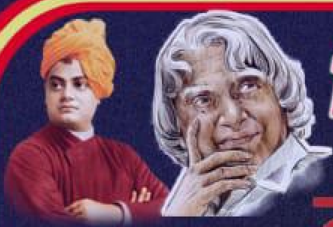

मिशन शिक्षण संवाद

बाल तरंग

बाल कविताएँ

08

मेरी माँ

सुबह रोज हम जब उठते हैं,
धरती माता को छूते हैं।
अपनी माँ भी बहुत ही प्यारी,
प्यार करे हम पर बलिहारी।।

अच्छी-अच्छी बात सिखाए,
सदा साफ रखे हमें नहलाए।
मन भाए वो खाना बनाए,
स्कूल भेजे खेल खिलाए।।

रचनाकार- नैमिष शर्मा (स०अ०)
परि० संवि० पू० मा० विद्यालय- तेहरा, क्षेत्र व जनपद- मथुरा

मिशन शिक्षण संवाद

बाल तरंग

बाल कविताएँ

09

```` मेरी मैडम `````

देखो मेरी मैडम आयीं,
अपने संग वो छाता लायीं।
आज तो बारिश बहुत हो रही,
मैं तो अभी घर में सो रही।।

कुछ बच्चे पढ़ने जा रहे हैं,

मिशन शिक्षण संवाद

बाल तरंग

बाल कविताएँ

10

कठपुतली

एक खेल कठपुतली का है,
कठपुतला भी कपड़े का है।
पर्दे के पीछे से नाच नाचती,
कठपुतली चलना न जानती।।

ठुमक कभी उछले कभी गिरती,
कठपुतला से बातें करती।

मिशन शिक्षण संवाद

बाल तरंग

बाल कविताएँ

तकनीकी सहयोग-
आयूषी अग्रवाल, मुरादाबाद

रचनाकार-
नैमिष शर्मा, मथुरा

संकलन सहयोग-
आर० के० शर्मा
चित्रकूट